21वीं सदी की संस्कृत कविताओं का अध्ययन

साधना संगम (संस्कृत विभाग), शोधकर्ता, सनराइज़ विश्वविद्यालय, अलवर (राजस्थान)
डॉ स्वदेश यादव (संस्कृत), सहायक- प्रोफेसर (संस्कृत विभाग), सनराइज़ विश्वविद्यालय, अलवर (राजस्थान)

सारांश

प्राचीन काल से रामायण और महाभारत जैसे कार्यों से उपजि संस्कृत महाकाव्य काव्य की परंपरा 21वीं सदी में भी फल-फूल रही है। एस.बी.वर्नेकर और ओगेटी प्रक्षित शर्मा जैसे कवियों ने अपने योगदान से संस्कृत साहित्य को समृद्ध किया है, जबकि डॉ. हरिनारायण दीक्षित और श्रीराम दवे जैसे आधुनिक कवि विषयों और निर्माण के साथ प्रयोग करते रहते हैं। यह निबंध डॉ. हरिनारायण दीक्षित द्वारा लिखित दो आधुनिक संस्कृत महाकाव्यों, "भारतमाता ब्रूते" और "राधाचरितम" पर प्रकाश डालता है। "भारतमाता जानवर" पश्चिमी प्रभाव के सामने भारतीय संस्कृति के पतन को दर्शाता है, जबकि "राधाचरितम" राधा और कृष्ण के बीच प्रेम और अलगाव को खूबसूरती से चित्रित करता है। दोनों महाकाव्य समकालीन समय में संस्कृत महाकाव्य काव्य की चल रही प्रासंगिकता और जीवन शक्ति को प्रदर्शित करते हैं।

विशेष शब्द : *महाकाव्य, भारतमाता ब्रूते, राधाचरितम, भारतमाता जानवर*

परिचय

महाकाव्य

यह सर्वविदित है कि काव्य की परंपरा वेदों से प्रारंभ होती है। ऋग्वेद, मानव सभ्यता का पहला प्रलेखित साहित्य, काव्यात्मक रूप में लिखा गया है। आदिकवि वाल्मिकी ने अपनी रामायण की रचना इसी रूप में की है। इसी प्रकार विश्वकोश ज्ञानी वेदव्यास ने महाभारत को काव्यात्मक रूप में लिखा है। कालिदास, भारवि और अन्य लोगों ने भी वाल्मिकी और व्यास जैसी प्रतिभाओं के मार्ग का अनुसरण किया और संस्कृत साहित्य को क्लासिक कविता दी। संस्कृत कवियों के प्रयोगों ने काव्य के विभिन्न रूपों जैसे खंडकाव्य, शतक, मुक्तक और महाकाव्य आदि को जन्म दिया, लेकिन महाकाव्य संस्कृत कवियों के पसंदीदा साहित्यिक रूपों में से एक है। महाकाव्यों की परंपरा बहुत पहले रामायण और महाभारत काल से शुरू हुई थी। लंबे कथन और आकार में बड़े काव्य को महाकाव्य कहा जाता है। महाकाव्य की विभिन्न परिभाषाएँ विभिन्न संस्कृत वक्तृताओं जैसे विश्वनाथ, दानी, वामन, भामह आदि द्वारा दी गई हैं। सभी परिभाषाओं का सार यह है कि महाकाव्य में कई सर्ग होने चाहिए। नायक को कोई देवता या कुलीन परिवार का योद्धा होना चाहिए जिसमें उदारता, वीरता और दृढ़ता जैसे गुण हों। महाकाव्य में मुख्य भाव कामुक, वीर या शांत होना चाहिए। इसकी शुरुआत आशीर्वाद से होनी चाहिए। इसमें मीटरों की विविधता होनी चाहिए। इसमें चंद्रमा, सूर्य, ऋतुओं, नगरों, पर्वतों, नदियों आदि का प्रचुर वर्णन होना चाहिए।

महाकाव्य का नाम कवि, कहानी या नायक के नाम पर रखा जाना चाहिए। मानव जीवन के चार लक्ष्यों यानी धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष में से एक को महाकाव्य के माध्यम से प्राप्त किया जाना चाहिए। संस्कृत साहित्य में महाकाव्य सबसे पुराने साहित्यिक रूपों में से एक है। अपनी बड़ी लंबाई और लंबी कथा शैली के कारण महाकाव्य या महाकाव्य कवि को अपनी रचनात्मकता और क्षमता प्रदर्शित करने के लिए बहुत जगह देता है। इसलिए, साहित्यिक रूप के रूप में महाकाव्य कई संस्कृत विद्वानों के मन को आकर्षित करता है। एस.बी.वर्नेकर और ओगेटी प्रिक्षित शर्मा जैसे कई आधुनिक प्रसिद्ध संस्कृत विद्वानों ने क्रमशः छत्रपति शिवाजी और महाराणा प्रताप के जीवन पर विशाल महाकाव्य लिखकर अपने अद्भुत योगदान से संस्कृत साहित्य को समृद्ध किया। सत्यव्रत शास्त्री, ब्रह्मानंद शुक्ल, रेवाप्रसाद द्विवेदी, अभिराज राजेंद्र मिश्र, रवीन्द्र कुमार पांडा और कई अन्य लोगों ने संस्कृत महाकाव्य साहित्य को समृद्ध बनाने में योगदान दिया। महाकाव्य की सदियों पुरानी परंपरा इस 21वीं सदी में भी चल रही है। इक्कीसवीं सदी के संस्कृत कवि भी पीछे नहीं हैं और लगातार इस बड़ी लयबद्ध रचना में लगे हुए हैं। लेकिन, आधुनिक संस्कृत कवियों ने हमेशा न केवल अपने पूर्ववर्तियों के नक्शेकदम पर चलते रहे; उन्होंने

परंपरा का पालन किया और इसके साथ-साथ उन्होंने कविता के विषयों और निर्माण के साथ प्रयोग भी किया। डॉ. हरिनारायण दीक्षित और श्रीराम दवे जैसे कवि हैं जिन्होंने संस्कृत साहित्य को तीन से अधिक महाकाव्य दिये हैं। ऐसे कई अन्य लेखक भी हैं जो इस 21वीं सदी में विभिन्न विधाओं में साहित्य रचना करने और अपने बहुमूल्य योगदान से उसे समृद्ध करने का सतत प्रयास कर रहे हैं।

भारतमाता ब्रूते: भारतमाता ब्रूते डॉ. हरिनारायण दीक्षित द्वारा रचित एक आधुनिक संस्कृत महाकाव्य है। यह महाकाव्य 2003 में ईस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली द्वारा प्रकाशित हुआ है। महाकाव्य 22 सर्गों में विभाजित है और इसमें 1654 छंद हैं। लेखक ने इस महाकाव्य के प्रत्येक सर्ग को नाम दिया है। सर्ग तीन और चार का शीर्षक एक ही है।

क्र. सं	कैंटो का नाम (Canto)	वर्सेज (Verses)
1	मङ्गलाचरणम्	79
2	लक्ष्मीविष्णुजि ज्ञासात्मकः	45
3	हरिद्वारदशतनात्मकः	95
4	हरिद्वारदशतनात्मकः	63
5	रभातसूयोदयवणतनम-	47
6	हरिद्वार-	83
7	स्विदशतनात्मकः	46
8	मनसादेवीदशतनात्मकः	47
9	विश्विवद्यालयवणतनम्	248
10	भारतमातृमिन्दरदशतनम्	105
11	भारतमातृमिलनम्	48
12	संस्कृति -	48
13	मातापितददु शावणतनम-	112
14	यौतकदष्परणामवणतनम्	50
15	समाजददुशावणतनम-	92
16	नारीददु शावणतनम्	75
17	हरिकृपावणतनम्	48
18	नारीमनोवृत्तिवणतनम्	50
19	दूरदर्शनदोषवणतनम्	73
22	शिक्षादशावणतनम्	58
21	राजनीतिदशावणतनम्	58
22	सान्त्वनादानम्	81
		1654

कवि के परिचय के बारे में महाकाव्य में पाँच और छंद हैं। तो, इस महाकाव्य में छंदों की कुल संख्या 1659 है। कवि ने भगवान विष्णु और देवी लक्ष्मी को अपने महाकाव्य के मुख्य पात्रों के रूप में चित्रित किया है। डॉ. दीक्षित ने हरिद्वार का मनोरम वर्णन करते हुए देव युगल की यात्रा का वर्णन किया है। इसमें भारत और भारतीय संस्कृति के पतन का चित्रण है। कवि वर्तमान समय में शिक्षा की स्थिति का वर्णन निम्नलिखित छंद में करता है।

नैकेषु शिक्षावि षयेषु सत्स्विप
नाचारशास्त्रं बत ति पाठ्यते ।
यानेषु तीव्रा यकद दीयते गितः
तत्तेषु योज्यो हि तदीयरोधकः ।।

कवि इस बात की भी झलक देता है कि कैसे पश्चिमी संस्कृति हमारी जड़ों पर हमला करती है और हम कैसे अपनी संस्कृति और अपने मूल्यों को भूल जाते हैं। भारतीय संस्कृति, जो सबसे पुरानी और समृद्ध संस्कृतियों में से एक है, खतरे में है क्योंकि पश्चिमी संस्कृति लगातार खुद को स्थापित कर रही है और भारतीय संस्कृति को मिटा रही है। इसने हमारे पारिवारिक मूल्यों, रीति-रिवाजों और परंपराओं को बहुत प्रभावित किया है। दूसरी संस्कृति से अच्छी बातें अपनाने

में कोई बुराई नहीं है लेकिन अपनी संस्कृति को नहीं भूलना चाहिए। लेकिन, मौजूदा समय में हमें इसका बिल्कुल उलट देखने को मिला।

राधाचरितम्: राधाचरितम् हरिनारायण दीक्षित द्वारा लिखित एक महाकाव्य है। यह 2005 में प्रकाशित हुआ है। इसमें 22 सर्ग और 2322 छंद हैं। कवि का परिचय देने के लिए 17 से भी अधिक पद दिये गये हैं। अतः श्लोकों की कुल संख्या 2339 है।

क्र. सं	कैंटो का नाम (Canto)	वर्सेज (Verses)
1	चिन्तनसर्ग :	68
2	उद्बोधनसर्ग :	66
3	सम्बोधनसर्ग:	277
4	क्रियासर्ग:	51
5	कृतज्ञतासर्ग:	78
6	स्मृतिसर्ग:	79
7	संवादसर्ग:	212
8	व्रजदर्शनसर्ग:	84
9	यात्रासर्ग: :	95
10	प्रियदर्शनसर्ग:	135
11	भूयो वियोगसर्ग: :	42
12	अभिनंदनसर्ग:	51
13	प्रकतिपोषणसर्ग:	63
14	राधा चरणरेणुसर्ग: :	102
15	प्रतीक्षा सर्ग:	60
16	परिचयसर्ग: :	76
17	द्वारिकादर्शनसर्ग:	83
18	कृष्णगुरुजनदर्शनसर्ग:	146
19	ऐश्वर्यासर्ग:	205
20	मंत्रासर्ग:	70
21	दर्शनासर्ग:	163
22	महाप्रस्थानसर्ग:	116

इस महाकाव्य का केंद्रीय पात्र राधा है और कविता भगवान कृष्ण के प्रति राधा के असीम प्रेम को दर्शाती है। राधा और कृष्ण को प्रेम के प्रतीक के रूप में जाना जाता है। डॉ. हरिनारायण दीक्षित ने प्रेम में प्रेम और विरह का सुंदर वर्णन किया है। कृष्ण के प्रति राधा का अगाध प्रेम इस महाकाव्य के प्रत्येक छंद में प्रतिध्वनित होता है। कविता के आरंभ में ही कवि राधा की स्थिति का वर्णन करता है।

कलिंदकन्या कमनीयकूले
वृन्दावने कृष्णवियोगलीना ।
राधाभिधाना वृषभानुकन्या
विचन्तयन्त्यास्त कदम्ब मूले।।

कवि ने अनुष्टुप, उपजति, मालिनी, शिखरिणी, वसंततिलका, शार्दुलविकृतिता आदि विभिन्न छंदों का प्रयोग किया है। महाकाव्य की भाषा मधुर और स्पष्ट है। इस महाकाव्य को लिखने में कवि ने अपनी असाधारण क्षमता सिद्ध की है। महाकाव्य में दिए गए द्वारिका और व्रजभूमि जैसे शहरों के सुंदर वर्णन कवि की भाषा पर पकड़ को दर्शाते हैं।

ग्वल्लदेवचरितम्: श्री ग्वल्लदेवचरितम् हरिनारायण दीक्षित द्वारा लिखित एक महाकाव्य है। यह 2008 में प्रकाशित हुआ था। महाकाव्य में 27 सर्गों में 2302 छंद हैं। उत्तरांचल के कुमाऊँ क्षेत्र के राजा ग्वल्लदेव इस महाकाव्य के नायक हैं। कवि स्वयं कुमाऊँ विश्वविद्यालय में प्रोफेसर के रूप में कार्यरत थे। इसलिए कुमाऊँ क्षेत्र का निवासी होने के कारण वे लोक देवता राजा ग्वालदेव

की जीवन गाथा से परिचित थे और उनके व्यक्तित्व से प्रेरित भी थे। इसलिए उन्होंने इस महाकाव्य को लिखा। महाकाव्य की शुरुआत देवी-देवताओं, माता-पिता और राजा ग्वल्लदेव के वर्णन से होती है। अगले सर्ग में वर्तमान भारतीय राज्य उत्तराखंड के कुमाऊं क्षेत्र की सुंदरता और राजा हलाराया के शासन का वर्णन है। हालाँकि उसकी सात रानियाँ थीं, फिर भी वह निःसंतान था। एक योगिराज ने राजा को भगवान विभांडेश्वर महादेव की तपस्या करने का सुझाव दिया। इसके फलस्वरूप उन्हें आठवीं रानी कालिका प्राप्त हुई जिसने उनके उत्तराधिकारी को जन्म दिया। इसमें राजा की अन्य रानियों की ईर्ष्या और ग्वल्लदेव के बचपन का वर्णन है; बाद में ग्वालदेव की राज्य में वापसी, राजा के रूप में उनके राज्याभिषेक, उनके शासन में राज्य के लोगों की खुशी और समृद्धि का वर्णन आता है। अंतिम सर्ग में ग्वल्लदेव के इस नश्वर संसार से प्रस्थान का वर्णन है और वह कैसे उस क्षेत्र के लोगों के स्वामी बन गए। कविता इसी कविता के महत्व के वर्णन के साथ समाप्त होती है। कवि ने कुमाऊँ के लोक देवता ग्वल्लदेव के चरित्र का सफल चित्रण अपनी लेखनी के माध्यम से किया है। कविता की भाषा आसानी से समझ में आने वाली है. कवि ने कविता में अपनी भावनाओं को दर्शाने के लिए विभिन्न छंदों का प्रयोग किया है।

क्र. सं	कैंटो का नाम (Canto)	वर्सेज (Verses)
1	मङ्गलाचरणम्	56
2	कूर्माचलवर्णनम	90
3	सन्तानाभावदु:खववर्णनम्	87
4	पुत्रप्रापत्यवर्णनम्	62
5	श्रीविभाण्डश्वराचतनावणतनम्	101
6	भीष्टपत्नीलाभवणतनम्	162
7	गभातगमनवणतनम्	43
8	सपत्नीष्यातिविणतनम्	45
9	सपत्नीकपटवणतनम्	97
10	श्रीग्वल्लदवजन्मवणतनम्	112
11	बाल्यवणतनम्	106
12	संबोधवणतनम्	83
13	ग्वल्लरत्यागमनवणतनम्	58
14	विमातृमिलनवणतनम्	64
15	सपत्नीपश्चात्तापवणतनम्	96
16	कालिकाशाजागरणवणतनम्	64
17	मातापितृमिलनवणतनम्	208
18	यौवराज्याभिषेकवणतनम्	82
19	विमातृवियोगवणतनम्	70
20	पितृवियोगवणतनम्	40
21	अभीष्टशासनिविधवणतनम्	63
22	राज्यिनरीिणवणतनम्	121
23	चम्प्पावतराज्यलाभवणतनम्	90
24	प्रजासुखसमृद्धिवर्णनम्	82
25	दहत्यागवणतनम्	80
26	लोकदवत्वलाभवणतनम्	62
27	माहात्म्यवणतनम्	78

जानकी-जीवनम्: 'जानकी-जीवनम्' दशरथ द्विवेदी द्वारा लिखित एक महाकाव्य है। इसका प्रकाशन वर्ष 2006 में हुआ था। यह महाकाव्य 18 सर्गों में विभाजित है। प्रत्येक सर्ग में 120 छंद हैं। महाकाव्य में छंदों की कुल संख्या 2160 है। यह महाकाव्य भारत और भारतीय संस्कृति

की महिमा का गान करता है तथा मिथिला और अयोध्या जैसे नगरों का वर्णन भी करता है। इसमें सीता के जन्म के उद्देश्य और मिथिला के आम लोगों के जीवन को भी दर्शाया गया है। महाकाव्य में ऋतुओं का मोहक वर्णन है। महाकाव्य में वर्णित प्रमुख घटनाएँ धनुर्मखमहोत्सव, राम का विवाह समारोह, अयोध्या में सीता का स्वागत, राम-सीता का अयोध्या से निर्वासन और वन में रहना, सीता का अपहरण, सुग्रीव के साथ मित्रता, अशोकवाटिका प्रकरण, सीता की खोज हैं। , युद्ध, राम का राज्याभिषेक, सीता का निर्वासन, सीता का धरती माता की गोद में प्रवेश आदि। कविता की भाषा आसानी से समझ में आने वाली और अस्पष्टता से रहित है। कवि ने महाकाव्य को इंद्रवज्र, उपेन्द्रवज्र, उपजति, अनुष्टुप, वंशस्थ, सर्गधारा, मन्दाक्रांता, द्रुतविलंबिता और शार्दुलविकृत आदि विभिन्न छंदों का प्रयोग कर सजाया है।

अम्बेडकर दर्शनम्: अम्बेडकर दर्शनम 2009 में बलदेव सिंह मेहरा द्वारा लिखित एक महाकाव्य है। एक कवि ने कई धार्मिक मुद्दों पर अपने विचारों का प्रतिनिधित्व करने के लिए बाबा साहेब अम्बेडकर नामक एक विशाल व्यक्तित्व को चुना है। इस महाकाव्य को चरित्रकाव्य भी माना जाता है। अम्बेडकर दर्शनम एक काव्य रचना है जो 17 सर्गों और 1015 छंदों में विभाजित है। यह महाकाव्य बाबा साहेब अम्बेडकर की जीवन कहानी और उनके दर्शन, धर्म पर उनके विचारों से संबंधित है जो तर्कसंगतता पर आधारित हैं। कवि ने सर्गों को शीर्षक नहीं दिया है।

कैंटो का नाम (Canto)	**वर्सेज (Verses)**
1	42
2	41
3	35
4	53
5	50
6	59
7	82
8	87
9	48
10	73
11	13
12	46
13	38
14	56
15	103
16	69
17	120

कवि ने कविता में बौद्ध दर्शन का विस्तृत वर्णन किया है। कवि ने पाली भाषा में वाक्यों का भी प्रयोग किया है। इस महाकाव्य में कवि ने पिछड़े लोगों की पीड़ा, जाति आधारित भेदभाव और अस्पृश्यता के मुद्दे का चित्रण किया है जो डॉ. अम्बेडकर को हिंदू धर्म छोड़कर बौद्ध धर्म अपनाने के लिए मजबूर करता है। मनुष्य किसे कहा जाता है, इसकी परिभाषा कवि ने उत्कृष्टता से दी है। कवि के शब्दों में –

अयाति च तथा याति पृथिव्यारितिथजतनः ।
भूत्वा जनिहतैषी यो गच्छत्येह स मानवः ।।

हिमाचलावैभवम्: हिमालयवैभवम 2009 में केशवराम शर्मा द्वारा लिखित एक महाकाव्य है। यह महाकाव्य नौ सर्गों और 467 छंदों में विभाजित है। कवि ने इस महाकाव्य कविता में हिमाचल की सुंदरता का वर्णन करना चुना। हालाँकि साहित्य में कई अन्य कविताएँ हैं जो हिमाचल क्षेत्र के पहाड़ों, नदियों, तालाबों और स्थानों की प्राकृतिक सुंदरता का वर्णन करती हैं, लेकिन कवि

की अपनी लेखन शैली और अभिव्यक्ति के तरीके ने इस कृति को अद्वितीय और उल्लेखनीय बना दिया है। कविता निम्नलिखित सर्गों में प्रस्तुत की गई है:

कैंटो का नाम (Canto)	वर्सेज (Verses)
निसर्गसर्गः	65
मुनिसर्गः	47
मुनिसर्गः	56
देवीसर्गः	55
देवीसर्गः	56
देवसर्गः	33

महाकाव्य का निम्नलिखित श्लोक हमें कालिदास के कुमारसंभवम के आरंभिक श्लोक की याद दिलाता है:

अस्योत्तरां कदशमलङ्कु रुते रकामं
हैमाचलः सकलपवततराजिराजः ।
स्थूलाङ्गतुङ्गिशखराविलिभवृततो यः
स्त्रीग्भयतथा सुरसररत्सुमजाभिरिंद्र ॥ 1.2 ॥

भागवतम्

भार्गवीयम 2008 में डॉ. मिथिलाप्रसाद त्रिपाठी द्वारा रचित एक महाकाव्य है। महाकाव्य में 32 सर्ग और कुल 1690 छंद हैं।

क्र सं	कैंटो का नाम (Canto)	वर्सेज (Verses)
1	भृगुचरितम्	43
2	च्यवनजननम्	42
3	च्यवनप्रभावो	37
4	च्यवनचरितम्	31
5	रुरुचरितम्	45
6	शुक्रचरितम्	42
7	मार्कण्डयानुचरितम्	68
8	दधिचिचरितम्	69
9	और्वचरितम्	61
10	जमदग्निवृत्तवणतनम्	36
11	परशुरामरभवः	43
12	परशुरामिवद्याराधनम्	51
13	रामपराक्रमः	51
14	रामिवद्यागमः	41
15	जमदग्निकोप :	60
16	जमदग्निचरितम्	54
17	परशुरामाशिर्वाप्राप्तिः	61
18	कार्तवीर्यचरणम्	91
19	सुचन्द्रवधः	48
20	कार्तवीर्यवधः	51
21	गणपतिसख्यम्	32
22	जमदग्निसंस्कारः	47
23	परशुराममखः	45
24	रामक्षेत्रनिर्मानं	51
25	रामक्षेत्रवरणं	52
26	परशुरामकृतं	92

	नवदेशनिर्माणम्	
27	अंबचारिततम्	66
28	गुरुशिष्यसङ्गरम्	84
29	रामविद्या प्रदानम्	71
30	श्रीविद्याग्रहणम्	25
31	रामरामयोः समागमः	55
32	परशुरामस्तुति :	52
	कुल	1690

सतानामिगौरवम्: यह महाकाव्य डॉ. मिथिलाप्रसाद त्रिपाठी द्वारा 2010 में लिखा गया है। इसे न्यू भारतीय बुक कॉर्पोरेशन, दिल्ली द्वारा प्रकाशित किया गया है। इस महाकाव्य को गुरुघासीदास-महाकाव्य के नाम से भी जाना जाता है। कवि ने इस महाकाव्य को गुरु घासीदास को समर्पित किया है जिन्होंने अपना पूरा जीवन गरीब पिछड़े लोगों की सेवा में समर्पित कर दिया और उनकी भलाई के लिए उन्होंने 'सत्यनाम' संप्रदाय की स्थापना की। उनके अनुसार, यह मनुष्य के कर्म हैं जो यह तय करते हैं कि व्यक्ति कैसा है, न कि उसकी जाति। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि वह किस जाति में पैदा हुआ है। हालाँकि वह अनपढ़ थे, फिर भी उन्होंने क्षेत्रीय भाषा में कई भक्ति कविताओं की रचना और गायन किया है।

श्रीपरशुरामचरितम्: यह महाकाव्य डॉ.पुष्करदत्त शर्मा द्वारा लिखा गया है। महाकाव्य 612 छंदों में 11 सर्गों में विभाजित है। यह महाकाव्य 2011 में राष्ट्रीय संस्कृत साहित्य केंद्र, जयपुर द्वारा प्रकाशित किया गया है। जैसा कि शीर्षक से पता चलता है कि यह महाकाव्य भगवान परशुराम के महान चरित्र का वर्णन करता है। संस्कृत साहित्यिक परंपरा के अनुसार, इस महाकाव्य का आरंभ मंगलकारी छंद से होता है। फिर परशुराम के पिता जमदग्नि के जीवन का वर्णन है और बाकी महाकाव्य में परशुराम के चरित्र और उनके महान कार्यों का वर्णन है। कवि ने इस महाकाव्य में शार्दुलविक्रीत, वंशस्थ, वसंततिलक, सर्गधारा, अनुष्टुप, मालिनी, शिखरिणी, मन्दाक्रान्ता, आर्या, उपेन्द्रवज्र, द्रुतविलम्बिता जैसे विभिन्न छन्दों का प्रयोग किया है। कवि ने सर्गों को शीर्षक नहीं दिये हैं।

कैन्टो	**वर्सेस**
1	57
2	63
3	55
4	51
5	49
6	50
7	50
8	50
9	50
10	51
11	86

इस महाकाव्य में मुख्य भाव वीर है और यह वैदर्भिभाषा में लिखा गया है।

साकेत-सौरभम्: साकेत-सौरभम् डॉ. भास्कराचार्य त्रिपाठी द्वारा लिखा गया है। इसे नागा पब्लिकेशन, दिल्ली द्वारा 2003 में प्रकाशित किया गया है। महाकाव्य रामकथा पर आधारित है। यह आठ सर्गों और 495 छंदों में विभाजित है।

क्र सं	**कैंटो का नाम (Canto)**	**वर्सेज (Verses)**
1	अवतार	73
2	संस्कारः	68
3	संकल्पः	86

4	सहकार:	48
5	उद्योग :	49
6	विक्रम :	48
7	अभिषेक:	69
8	दिग्विजय :	54

पी. डी. मिश्रा इस पुस्तक के आगे टिप्पणी करते हैं:

"राम एक महाकाव्य के आदर्श नायक की भूमिका में इतने फिट बैठते हैं कि भारतीय महाकाव्य परंपरा मूल रूप से उन्हीं पर केंद्रित है। हालाँकि, वर्तमान कार्य को जो अलग करता है, वह है इसके मीटरों की विविधता, विषयों की मौलिकता और स्थितियों का उच्चतम काव्यात्मक प्रतिपादन, जो अन्यथा परंपरा से सभी के लिए काफी परिचित है?'' एक महान कृति साकेत-सौरभम मानवीय स्थितियों को विशिष्ट रूप से व्यक्त करती है, जो सार्वभौमिक हैं। जब कोई अपनी शक्ति और अधिकार खो देता है तो लोगों का व्यवहार कितनी तेजी से बदलता है, यह दिखाया गया है। बाली के मामले में ऐसा होता है. कवि के शब्दों में –

इन्द्रवत् सर्वदा स्पन्दनस्थो लसन्
नम्रशाखामृगैः क्लिष्टगत्या ययौ ।
हन्त रक्तस्य पङ्के निमज्जतनुं
नैव किञ्चन्नमस्कृतमप्याययौ ॥4.18॥

साकेत-सौरभम को 2003 में उत्तर-प्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ से पुरस्कार मिला। कवि, डॉ. भास्कराचार्य त्रिपाठी को इस महाकाव्य के लिए दिल्ली संस्कृत अकादमी से अखिल भारतीय पंडित जगन्नाथ पद्यराचन पुरस्कार भी मिला।

उत्तरनैषधीयम्: उत्तरनैषधीयम् राम-लक्ष्मण गोस्वामी द्वारा लिखित एक महाकाव्य है। यह 2005 में प्रकाशित हुआ है। महाकाव्य 22 सर्गों और 2818 छंदों में विभाजित है। कवि ने सर्गों को शीर्षक नहीं दिये हैं।

कैंटो का नाम (Canto)	**वर्सेज (Verses)**
1	163
2	106
3	136
4	123
5	138
6	112
7	109
8	109
9	160
10	137
11	128
12	124
13	53
14	101
15	98
16	129
17	220
18	150
19	67
20	161
21	139
22	155

इस महाकाव्य की विषयवस्तु श्री हर्ष के नैषधीयचरितम् यानी नल और दमयंती की जीवन कहानी के समान है। दमयंती ने स्वयंवर में देवताओं को छोड़कर नल को अपने पति के रूप में चुना। बाद में नल ने अपना राज्य खो दिया; उन्होंने दमयंती को त्याग दिया और अवध नामक देश में सारथी के रूप में काम किया। अंत में नल को अपना राज्य वापस मिल गया और वे

सदैव सुखी रहे। लेकिन इस महाकाव्य में कवि नल की कहानी को इसके बाद भी जारी रखता है। कवि ने अपना स्रोत स्कंदपुराण से लिया है और फिर वह नल के पुत्र इंद्रसेन के शासन का वर्णन करता है, जो अपने पिता की तरह एक धर्मात्मा राजा था। उनका चंद्रांगद नाम का एक बेटा है, जिसका विवाह सिमंतिनी नामक राजकुमारी से हुआ। एक बार वह यमुना नदी में नौका विहार कर रहे थे, डूब गये। उसे नाग-कन्याओं ने बचाया और वे उसे नागराज तक्षक के पास ले आईं।

निष्कर्ष

21वीं सदी की संस्कृत कविताओं का निष्कर्ष निकालते हुए, हम देख सकते हैं कि इन कविताओं में आधुनिकता और पारंपरिकता का एक संतुलन है। इन कविताओं में समकालीन समस्याओं, विचारों और भावनाओं को संस्कृत भाषा के माध्यम से व्यक्त किया गया है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि संस्कृत एक जीवंत और प्रासंगिक भाषा है। इसके अलावा, इन कविताओं में संस्कृति, इतिहास और धर्म के प्रति गहरी श्रद्धा और सम्मान दिखाया गया है। इस प्रकार, 21वीं सदी की संस्कृत कविताएँ न केवल भाषा की समृद्धि को बनाए रखने में सहायक हैं, बल्कि यह भी दिखाती हैं कि कैसे पुरानी परंपराएँ और मूल्य आधुनिक समय में प्रासंगिक रह सकते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. शर्मा, आर. (2021)। "समकालीन संस्कृत कविता: विषयों और शैलियों की खोज।" जर्नल ऑफ इंडियन लिटरेचर, 55(2), 120-135।
2. जोशी, पी. (2019)। "आधुनिक संस्कृत काव्य: एक आलोचनात्मक अध्ययन।" नई दिल्ली: मनोहर प्रकाशन।
3. कुमार, ए. (2020)। "21वीं सदी में संस्कृत: चुनौतियाँ और अवसर।" इंटरनेशनल जर्नल ऑफ लिंग्विस्टिक्स एंड लिटरेचर, 6(3), 45-52।
4. तिवारी, एम. (2021)। "संस्कृत साहित्य को पुनर्जीवित करना: आधुनिक युग में संस्कृत कवियों की भूमिका।" जर्नल ऑफ कल्चरल स्टडीज, 8(2), 35-42।
5. सिंह, वी. (2018)। "आधुनिक संस्कृत काव्य और भारतीय संस्कृति में इसका योगदान।" एशियन जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी स्टडीज, 4(5), 89-94।
6. राज, एम. (2019)। "आधुनिक समय में संस्कृत: कविता और गद्य का एक अध्ययन।" इंटरनेशनल जर्नल ऑफ लिटरेरी स्टडीज, 7(1), 23-30।
7. रेड्डी, एस. (2020)। "डिजिटल युग में संस्कृत साहित्य की खोज।" जर्नल ऑफ साउथ एशियन स्टडीज, 5(2), 15-22।
8. गुप्ता, आर. (2022)। "संस्कृत की निरंतरता: आधुनिक संस्कृत लेखन पर परिप्रेक्ष्य।" साहित्य और इतिहास, 11(1), 55-64.
9. मिश्रा, एस. (2018)। "संस्कृत काव्य में नवाचार: समसामयिक प्रवृत्तियों का एक अध्ययन।" इंडियन जर्नल ऑफ कल्चरल स्टडीज, 5(1), 29-37।
10. सूद, ए. (2021)। "संस्कृत और आधुनिक विश्व: साहित्य के माध्यम से अंतर को पाटना।" जर्नल ऑफ लैंग्वेज एंड लिटरेचर, 6(3), 48-56।